आओ विचारीए

(निहकलंक हरि शब्द भंडार
अते
सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

संसार ने तुहातों रस्ता वेखणा है। एस नवीं रीती नीती नूं तुसां अपणौणा है अते तुसां एस ते चलणा है। चल्लण विच्च तुहानूं थोड़ी जिन्नी कठनाई नहीं आउंदी जे तुहाढ्ढा आपणा अन्तर जेहड़ा है एह प्यार विच्च है। इस करके जो इक्क दूजे नाल द्वैत भावना जां बुरा सोचणा विचारना एह सोभा नही दिन्दा। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इस करके तुसीं आपणे आप दीआं जुम्मेवारीआं नूं आप सिर ते चुक्कणा है और सहारा परमातमा दा लैणा है। इन्सान दा किसे दा सहारा नहीं लैणा और किसे साथी तों वी सलाह नहीं पुच्छणी। जो तुहाढ्ढा साथी तुहाढ्ढे नाल है, तुहाढ्ढे विच्च है उस तों सलाह लैणी। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हर इक्क दे हिरदे विच्च एह उतशाह ते चाअ होणा चाहीदा है कि मैं दूसरे तों अग्गे रहवां। ते दूसरा कहे मैं एहदे तों अग्गे रहवां। पिच्छे रहण वाला कोई नहीं होणा चाहीदा। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

और तुहानूं पता है कि तुसां कागज लए सन जिस उत्ते हलफीआ ब्यान लए जाणे ने सारयां दे । एहनां हलफीआं ब्यानां दा जेहड़ा सिआही दा लेख है उस दा भाव समझण दी थोड़ी लोड़ है। कि जो हरिजन है प्रभू दा भगत है, प्यारा है जां सतिगुर नूं सतिगुर करके तसव्वर करदा है, मन्नदा है, ग्रहण करदा है, अग्गे थोड़ी जही रयाइत सी। कदी किसे ने विच्चों चार साल मन्न लिआ, दो साल खा पी लिआ फिर आण के कहि दिता जी हुण मैं ठीक हां। एह हुण गुंजाइश नही होणी। जिहड़ा गिआ सो गिआ। उह अगले जन्म लई त्यार रहे। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इस करके सारयां नूं बड़े खुशीआं ते चावां नाल ते ऐन छाती कढ्ढ के संसार विच्च फिरना चाहीदा है कि असीं हां। जे तुसीं हो तां तुहाड्डा मालक वी है। जे तुसीं नहीं ते तुहाड्डा मालक वी नहीं है। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सिक्खी सो परवान, जिन्हां सिक्खया सतिगुर भाईआ। सो सिक्खी कूड़ निशान, दुरमत मैल ना सके धुआईआ। रसना जिह्वा करन ज्ञान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। जिन्हां अन्तर मिल्या आण, सो सिख रूप वडयाईआ। अनपड़्हिआं देवे ज्ञान, पढ़िआं मत दए भुआईआ । गोबिन्द सूरबीर नौजवान, अमृत आत्म साचा जाम पिआईआ । (१३-४०५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिना नार कन्त तों बाकी सारे भाई भैण, नेत्र अक्ख ना कोई बदलाईआ। (५ पोह शै सं ६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो की किसे कोलों मंगो, मानस सारे नज़री आईआ। इक्को प्रभू दे प्यार विच्च आपणा आप रंगो, फेर रंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। (१ चेत शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धर्म दी धार सच दा वहण, तुसां जगत देणा वहाईआ। उंगलां कर कर सारे तुहानूं कहण, इन्हां दा इक्को पिता इक्को माईआ। (५ पोह शै सं ६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तुहाढ़े उत्ते धर्म दी धर्म नाल आस, प्यार मुहब्बत नाता लैणा जुड़ाईआ।
(१७ हाढ़ शै सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पुरख अकाल कहे मैं उहनां जोगा होवां, जो हौक्कयां नाल मेरा नाम ध्याईआ। अबिनाशी करता कहे मैं उहनां दे वैराग विच्च रोवां, जो अन्तर आत्म मेरा ध्यान लगाईआ। उहनां दी आत्म सेजा सोवां, जो प्रेम सिँघासण रहे विछाईआ। (२२ पोह २०२१ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तूं मेरा मैं तेरा कहके जिस वेले चाहो लैणा सद्द, हाज़र हज़ूर हो के नज़री आईआ। जे तुसीं मैनूं जाओ छड्ड, मैं फिर वी मुड़ के लवां मिलाईआ। दो जहानां विच्चों लवां लभ्भ, एह मेरी बेपरवाहीआ । मैं पत्थरां विच्च रहण वाला नहीं रब्ब, गुरमुखां दे अंदर वड़ के डेरा लाईआ। (२१ पोह शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पंज पोह कहे औह कूकदे हारां वाले फुल्ल, फुल्ल फुल्ल के आपणा आप वखाईआ। जन भगतो साडे बोलण वाले नहीं बुल्ल्, रसना नज़र कोई ना आईआ। असीं तुहाढ़े नाल मिल के हो गए तुहाढ़े तुल, इक्को तराजू प्रभ ने दिता टिकाईआ । असीं सच दस्सीए तुसीं कदे नहीं जाणा भुल्ल, भुल्ल विच्च कदे ना आईआ । बिना पुरख अकाल तों एस ज़िंदगी दा नहीं कोई मुल्ल, कीमत जगत ना कोई रखवाईआ। (५ पोह शै सं ६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मै ओस दा जो अंदरों मेरा संगी, बाहरों जफ्फीआं पाउँण वाल्लयां हत्थ कदे ना आईआ। (२८ पोह शै स २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लंगर कहे :

जिस मेरे विच्च बहि के लंगर छक के परम पुरख जाणा विसार, उह इक्को वार हुणे पल्लू जाओ छुडाईआ। जिन्नां रसना लाउणा मदिरा मास फेर करना अहार, उह वी पल्लू जाओ छुडाईआ। जिन्नां चाह नाल करना प्यार, उह चारे कूट भज्जो वाहो दाहीआ। मैं भगत सुहेले करने होर त्यार, जो धर्म दी धार विच्च समाईआ। (२३ पोह शश सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सारे दस्स दिउ तुहाढ़ु किथ्थे सौहरे ते किथे पेके, किथे तुहाढ़ी वज्जे वधाईआ। वेखयो किते प्रभू दे दर तों ना जाइओ छेके, छेकड़ बिना प्रभू तों कम्म कोई ना आईआ। बिना पुरख अकाल तों कम्म नहीं आउँदे मथ्थे टेके, टिक्के धूढ़ी खाक ना कोई रमाईआ। (२७ पोह शै सं ६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अकल कहे मैं आपणी अकल नाल अजे तक्क नहीं लम्भया भगवान, अग्गे हो ना दर्शन पाईआ। मैनूं जदों मिल्या शरअ दा शैतान, शरीअत विच्च देवे फसाईआ।
(११ चेत शै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो प्रभ मिलण दी इक्को जुगती, जुग जुग चली आईआ। जिस दा सीस झुके नाल फुरती, फुरनयां तों बाहर आपणा रंग रंगाईआ। (२१ पोह सै सं ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पता नहीं गोबिन्द केहड़ी गल्लों साड्डे नाल रुस्से, दूर बैठा अक्ख ना कोई खुल्लाईआ। उच्ची कूक पुकार किहा बौहड़ी दरोही सतिगुर नालों कदे ना किसे दी टुट्टे, जगत जीवण कम्म किसे ना आईआ। (१४ मध्घर शै सं २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिआस कहे :

साहिब सतिगुर तैनूं केहड़े लगदे चंगे ? मैनूं दे समझाईआ । की जेहड़े नहौंदे गोदावरी गंगे, सुरसती जमना तारीआं लाईआ।

गोबिन्द किहा :

बिन मेरे प्यार सारे गंदे, नहावण धोवण कम्म किसे ना आईआ। (१४ मध्घर श सं २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

वाअदा करो झगढ़ा मिट गिआ जात पात, दीन मज़ूब वरन बरन शरअ वंड ना कोई वंडाईआ। (१७ हाढ़ शै सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गोबिन्द किहा, बिआस, मेरा पुरख अकाल मेरे साथ, जेहड़ा दोहां दी चरनी डिग्गा आ, ओन्हां दे बख्शे सर्ब गुनाह, बण के पिता मां, कलिजुग कूड़ कुड़िआर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (१५ मध्घर शै सं २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गोबिन्द किहा

बिआस, सभ बिरथा खेल तमाश, पृथ्मी दए दुहाईआ। की करेगा पूजा पाठ, की करेगा तीर्थ ताट, की करेगा पुस्तक कताब, की करेगा वजाया रबाब, की करेगा गाया गाथ, जिन्हां चिर सतिगुर शब्द ना साथ रखवाईआ। (१६ मध्घर शै सं २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मैंनूं भगतां नूं मिलण दा सदा वेहल, होर कम्म कम्म किसे ना आईआ। जेहड़ा मैंनूं भुल्ले राम कहे उह मैं धक्क देवां धर्म राए दी जेल्ह, चित्र गुप्त लेखा सुणा के चुरासी विच्च सुटाईआ। (२८ पोह शौ तं ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सीता कहे : प्रभू दस्स होर कुछ, भेव अभेद खुल्हाईआ।

राम किहा :

मैं ओस वेले तत्त वजूद नहीं रक्खणा, सरीर नहीं रक्खणा, आपणयां सन्तां भगतां दे काया मन्दर अंदर विच्च लुकणा ओस गुठ्ठ, जिथों जगत अक्खां वाला वेखण कोई ना पाईआ। अंदरे अंदर लवां पुच्छ, शब्द शब्दी धार मिलाईआ। (२८ पोह शै सं ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एह रस्ता दस्सणा निम्रता विच्च ग़रीबी विच्च हलीमी विच्च रहो विच्च जहान, वड्डिआई कम्म किसे ना आईआ। जे अक्ख नाल तक्कणा ते तक्को श्री भगवान, जे मन नाल नस्सणा ते पुज्जो धर्म अस्थान, जे तन कोठे वसणा ममता शरअ ना रहे बेईमान, फेर अरजन तूं मेरा मैं तेरा साचा सज्जणा, खुशी प्यार दा देवां धूढ़ी मज़ना, नाम नेत्र ज्ञान पावां कजला, निझ नैण चक्षू शिव नेत्र इक्को दिआं खुल्हाईआ। (२८ पोह शै सं ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर कहणा मन्नो ठीक, काया ठीकर अन्त कम्म किसे ना आईआ।
(२ फग्गण २०१६ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लोक लज्जया छड्डो कर के वड्डा जेरा, जेरज अंड कम्म किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया रंग माणिआ पिच्छे बथेरा, अग्गे सतिगुर पल्लू आप छुडाइंदा। (२ फग्गण २०१६ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पिछले मेट के समाज रिवाज तमाम, धुर दा मार्ग इक्क वखाईआ। गुरमुखो, रिहो ना कोई अणजाण, सुध बुध इक्को इक्क वखाईआ। एह हुक्म श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । मन्नणा पए जिमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस झुकाईआ।
(१८ हाढ़ शै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सच समाज दा धर्म दी धार दा जन भगतो वजाउणा ढोल, ढोला तूं मेरा मैं तेरा गाईआ। (१७ हाढ़ शै सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सति धर्म दे तुलणा पूरे तोल, तक्कड़ जगत ना कोई रखाईआ। वेखयो किते वाअदे तों ना जायो डोल, अनडोलत परम पुरख अग्गे सीस निवाईआ।
(१७ हाढ़ शै सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

वेखयो प्रभ दे साहमणे बुद्धि दी दस्सओ कोई ना लिआकत, अकल दी अकल ना कोई दृढ़ाईआ। सदा रहणा हुक्म मुताबक, मतला कर के दिआं दृढ़ाईआ। जे पिच्छे झूठ बोलण दी आदत, अग्गे लउ बदलाईआ। (२८ पोह शै सं ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो जिस वेले धर्म विआह दा होवे विवहारा, पंजां दा लेखे लग्गे जैकारा, जैकारे पंजां विच्च नाता लए जुड़ाईआ। बिना प्रभू तों किसे दी गाउँणी नही वारा, वरका वरका ना कोई उलटाईआ। (१८ हाढ़ साढे नौ वजे)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ओस दी मरयादा ठीक चले सतारां हाढ़ा, सम्मत अठ्ठ अठ्ठ वडयाईआ। अनन्द कारज समें सारे भगत लाया करनगे पंज जैकारा, दूजी लिखवत ना कोई लिखवाईआ। एह हुक्म मिलणा नहीं दोबारा, एका इक्को वार सुणाईआ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अग्गे गुरमुख गुरमुख दी करे कोई ना चुगली, निन्दया वाला मुख ना कोई वखवाईआ।
(२ फग्गण शै स १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

वेखवयो, ...

विकार विच्च शरअ विच्च शरीअत विच्च असलीअत विच्च नवीअत विच्च वलदीअत विच्च अकलीअत विच्च कदे ना करयो इल्लत, आलमां विच्च फाजलां विच्च विदवानां विच्च विज्ञानां विच्च ज्ञानां विच्च ध्यानां विच्च मेहरबानां विच्च शाह सुलतानां विच्च निम्रता विच्च आपणा झट्ट लंघाईआ। (२८ पोह शै स ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

उह किसे तों पैसे टके नहीं वसूलदा, सीता कहे राम की करदा, राम कहे भगतां अग्गे प्रेम दी झोली डाहीआ। (२८ पोह शै स ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगतां विच्च भगवन प्रेम दी धार चलाई, शादीआं वाल्लयो सुण लउ कन्न लाई, इक्क दूजे नालों कदी नहीं करनी जुदाई, नार कन्त सांझा मिल के झट्ट लंघाईआ। सेवा विच्च रहे ना कोई ऊणताई, पतीव्रत हो के साचा मार्ग देणा वखाईआ। पती ने कदी नहीं बणना कसाई, बिनां सोचे समझे आपणी नारी नूं दए सताईआ। (२८ पोह श सं ३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सो सरोता जिस अन्तर अन्तर वड़ के किरपा करे आप निरँकार, निरंतर मंतर एका दए जणाईआ। तिस दा सुणया लेखे लग्गे जो सतिगुर शब्द धरे प्यार, बिन सतिगुर शब्द लेखा सके ना कोई चुकाईआ । सुणन वाल्लयां सरोतयां तों साहिब सतिगुर सदा बलिहार, जो उस दा नाम सुण के आपणे अंदर खुशी रहे प्रगटाईआ। (१५ सावण श शं २)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

नारद कहे अज्ज मैं खुशीआं विच्च चलावांगा शुरलीआं, शरअ नूं अग्ग नाल देणा सड़ाईआ। (६ चेत शै सं ६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इन्सानां नाल लड़ा के इन्सान, हैवानां नाल हैवान दिआं बणाईआ। किसे दा रहे ना जगत निशान, गुर अवतार पैगम्बर मिट जाए आण, सजदा रहे ना कोई सलाम, डण्डावत बन्दना ना कोई नाम, इक्को हुक्म चले श्री भगवान, ओस नूं मुहम्मदा किआमत कैहंदा जहान, जो पिछली नूं अगली ते अगली तों पिछली दए बदलाईआ।

(२४ माघ श स ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तेरे नाउँ दा इक्को एका, इक्क एकंकार तेरी वड वडयाईआ। तेरा हुक्म देश परदेशा, शब्द शब्दी नाल जणाईआ । जिनां तेरे नाम वेचण दा फड़या पेशा, तिनां नूं पेशे वाली वेसवा फेर बणाईआ । मस्तक लिखदे विकार हमेशा, छेती दरस करन कोई ना आईआ। मरन तों पहले साढे तिन्न साल हड्डां विच्च पै गिआ रेशा, तड़फ तड़फ के आपणा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। (१८—५७३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि बाणी साचा रंग साची अंमड़ीए, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा। रंग रंगे काया माटी झूठी चंमड़ीए, चम्म दृष्टी इष्ट मिटाइंदा । कीमत करता कोई ना लाए पैसा धेला दमड़ीए, चरन प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे आपे वेख वखाइंदा। (८-६३४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

""उह पैगम्बर काहदा उह पीर काहदा उह पिउ काहदा उह पुत्त काहदा जिस दा धर्म दा ना वधे अग्गा, सच विच्च सुच ना कोई समाईआ।"" (२१-५४६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख उह ना आखीए, जो माया रहे लपटाए । गुरसिख उह ना आखीए, जो तृष्ना भुक्ख वधाए। गुरसिख उह ना आखीए, जो जन शिंगार वेसवा रूप वटाए। गुरसिख उह ना आखीए, गुर संगत विच्च उच्चा बहि बहि आपणा रूप प्रगटाए । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाए।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख उह ना आखीए, जिस आत्म अन्तर ना इक्क ध्यान । गुरसिख उह ना आखीए, जिस मन भरया माण अभिमाण । गुरसिख उह ना आखीए, जो मंगे पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी आपे जाणे आपणी सच पछाण। (१०—३५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख सच्चा जाणीए, जो भाणा मन्ने करतार । गुरसिख सच्चा जाणीए, जो नाता तोड़े जगत संसार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन धूढ़ी करे शिंगार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर नाउँ करे अधार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर अमृत मंगे अमर भंडार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहारा। (१०-३५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिन्नां चिर इक्क ज़ीरो ना होवे इक्क, ओन्नां चिर गोबिन्द दा बणे कोई ना सिख, भावें कोटन कोट शास्त्र सिमरत वेद पुरान गए लिख, लिक्खयां पढ़यां प्रभ नूं मिलण कोई ना पाईआ। (२१-७१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गोबिन्द आख सुणाइंदा, चार कुण्ट जैकार। जो वरन बरन रखाइंदा, सो सुख ना मेरे दरकार । जो मेरा कीता उलटाइंदा, तिस पुच्छे ना कोई सच दरबार। जो मेरा अमृत सिंच रसना झूठ लगाइंदा, सो खाए जम की मार। जो मेरा बाणा तन पहनाइंदा, सो तक्के ना दूसर नार । जो मेरा केस सीस टिकाइंदा, सो जगदीस करे प्यार। जो मेरा सिख अखवाइंदा, तिस एका रूप नज़र आए संसार। गोबिन्द हर घट अंदर डेरा लाइंदा, कोई घट ना दिसे जिस सुत्ता ना पैर पसार । जो मेरे कोलों मुख भुआइंदा, तिस अग्गे मन्ने ना हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेल करे अपार। (१०—६१३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जो जन हरि संगत जाणे भैण भरा, तिस आपणा घोड़ा फेर वखाइंदा । जो गुरसिख गुरसिख मिलण दा रक्खे चा, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा । तिस गुरसिख दी गुर सतिगुर सेवा लए आप कमा, सेवा सेवकदार आप हो जाइंदा। फड़ फड़ बांहों उप्पर लए चढ़ा,

सच सिँघासण आप बहाइंदा । सचखण्ड दवार खुल्ला, आपणा मन्दर आप वखाइंदा। जोती जोत मेल मिला, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा । साचा धर्मी धर्म कमा, निहकरमी कर्म वखाइंदा।

(१०-८४०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

वसाखी उत्ते बचन दस्से सच्चे, सच सच जणाईआ। गुरमुख सो जो धी भैण कोई ना तक्के, जो तक्के तिस मिले ना कोई थाईंआ। जिस करना प्रेम, सो सतिगुर सरनाई ढठ्ठे, दूजी प्रीती कम्म किसे ना आईआ। (१४-२५८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

घर बहिणा दरसन नैणा, मुखड़ा नूर नूर दरसाईआ। गुरसिख मन्नणा गुर का कहणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। साध संगत विच्च मिल के बहिणा, हरि संगत हरि का रूप वखाईआ। गुर चरन प्रीती साचा गैहणा, जगत शिंगार ना कोई वडयाईआ। आदि अन्त भाणा सहणा, हरि भाणे विच्च समाईआ। (१०-६३४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर मिलिआं पंज तत्त काया माटी पुतला फेर बणदा सिख, शिश आपणा रूप वटाईआ। अग्गे मेला नाल इक्क, एकंकार रंग चढ़ाईआ। मानस जन्म बाज़ी लई जित्त, हार चरनां हेठ दबाईआ। (१६-२६३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

क्योंकि हर इक्क इन्सान के चार वरण हैं :

जब भगवान को याद करता है तो ब्रह्म है।
जब कोई चीज़ खरीदता है तो खत्री है।
जब ज़िमींदारी का काम करता है तों वैशय है।
जब टट्टी बैठ कर आपणा आप साफ करता है तो शूद्र हो जाता है।

(चिठीआं विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सो गुरमुख सूरा कहीए सन्त, जो सतिगुर सरन सेव कमाइंदा। जिस दा नाम निधान एका मंत, मंतर अवर ना कोई दृढ़ांइंदा। घर स्वामी हंढौंदा धुर दा कन्त, मालक खालक खलक विच्च ना कोई बदलाइंदा। (१६-४५५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

श्री भगवान कहे दुनियां दा झूठा जाणो रिश्ता, सगला संग ना कोई बणाईआ। सभ ने कूच करना आहिस्ता आहिस्ता, अग्गे पिच्छे भज्जण वाहो दाहीआ। इक्क अकाल उत्ते कर लउ सच्चा निसचा, जो निहचल धाम दए पुचाईआ। परम पुरख दा मन्नो इष्टा, गुरदेव इक्को सोभा पाईआ। जो अंदरों खोलू दृष्टा, दृष्टी दए बदलाईआ। झगड़ा मुका के दीन दुनी सृष्टा, श्रेष्ट आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा दए चुकाईआ। (१६—२६७ २६८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सिख नाल सिख लड़े होए गवार, अमृत रस ना कोई चखाईआ। जगत दुहागण नार विभचार, जो बैठी कन्त भुलाईआ। आत्म सेजा ना सकी शिंगार, आपणा घर ना आप सुहाईआ। आपणीआं भुजां ना सकी उभार, चतरभुज ना मेल मिलाईआ । दर दर कूके करे पुकार, बिन सतिगुर पूरे कोई ना सुणने पाईआ । एका ओट रक्खो निरँकार, गुर नानक गिआ समझाईआ। किसे दर ना मंगो बण भिखार, आपणे घर विच्च घर आपणा खोलू खुलाईआ। जिस जन मिले आप निरँकार, सृष्ट सबाई पिच्छे फिरे हलकाईआ । गुरसिख आपणा सिर गुर चरनां उतों वार, गुर तेरी लोकमात करे रुशनाईआ । सिखी सिदक सिख कर विचार, साखीआं पढ़ पढ़ ना वक्त गवाईआ । वालों निकी धारों तिखी रक्खी आप करतार, गुर गोबिन्द एह समझाईआ। (६-७७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्रभ पूरा पहले तोल के, फिर बण प्रभ का चेरा । सच रसना बचन बोल के, गुरसिख भुल्ल ना जाए मेरा। साचा शब्द दे प्रभ खोलू के, मदि मास ना आवे नेरा। प्रभ मारे जगत वरोल के, भंग करे बचन जन केरा। नाम सच मोती जगत वरोल के, विच्च संगत गुर लाए डेरा। मुखों कैहंदा सति बोल के, कलिजुग डोले ना सिख मेरा। जे जगत भुलेखा भुल्लणा, गुरसिख ना बणना। जे पूरे तोल ना तुलणा, दुःख मदि मास दा जरना। जे कलिजुग नहीं जे रुलणा, गुर चरन लाग कल तरना। महाराज शेर सिँघ अडोल कदे नहीं डुलणा, गुरसिख अडोल जगत विच्च करना । गुरसिख गुरमुख एक रूप, विच्च प्रभ जोत जगाई। सिख हो के विच्च कलिजुग, प्रभ नाउँ कलंक ना लाइणा। (१५ चेत २००८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिनां गुरमुखां सतिगुर सरन लै के आपणी आप पाई सूझ, उनां दा मन उनां अंदर आपे गिआ झूज, पंचम मिल के पंच परपंच करे ना कोई लड़ाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो साचे सन्तो सतिगुर मंज़ल प्रेम हदूद, जगत वंड ना कोई वंडाईआ।

(१६—८०३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख प्रभ का रूप है, जे भाणे चल्ले। गुरसिख विच्च वसदा प्रभ भूप है, कलिजुग बिललाए मूल ना हल्ले। साचा सिख मेरा सरूप है, अन्त काल सचखण्ड दर मल्ले।
(१३ चेत २००८ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर किरपा साची मूरत, रूप रंग रेख बाहर नज़र किसे ना आईआ ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

छुरा कहे मेरा रूप तिक्खा, तिक्खी धार जणाईआ। जिस दा लेख परवरदिगार ने लिखा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जेहड़ा धर्म दी धार विच्च पूरा दिसे ना सिक्खा, सिक्ख सतिगुर विच्च ना कोई समाईआ। उस दा सदी चौधवीं अन्तम निकले सिट्टा, सिट्टेबाजी ख़लक खुदाईआ। कीमत पैणी नहीं पत्थर इट्टां, मड़ी गोर रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। (२४ माघ शै सं ७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्द सिर्फ़ इतना ही है मगर रहित कठिन है जी । मास शराब तजौणा, जगत दे मेहणे झल्लणे, लोक लज्जया त्यागणी, आत्म सुरत शब्द दा मेल करके जगौणी।
(चिठीआं विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिस जीव नूं भाणा मन्नण दी ताकत होवे, अते परमात्म दे सवांग नूं वेख के डोले ना अते जगत दे ताहने मेहणे नूं सति कर मन्ने आपणे प्रीतम दे प्यार दी धार दे वैराग विच्च कमले रमले ते झल्ले हो जाईए, फेर वी धन्न धन्न है गुरसिख, एह गुरसिक्खी दी धार है। (सतिगुरां दुआरा कीते बचनां चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर दी इक्क गल्ल जे कोई मन्ने ना उह डुब्बे विच्च संसार, चुरासी विच्च कदे ना आईआ। उह इक्क गल्ल एह सदा सदा उस प्रभू नूं करो निमस्कार, डण्डावत विच्च ओसे नूं सीस निवाईआ । (२४-७६५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर मूरत जगत नहीं धारा, वेख वेख ना कोई समझाईआ । जिस दा खेल अगम्म अगोचर अगम्म अपारा, पारब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ । जिस नूं नानक निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गाया तूं ही मेरा साहिब दातारा, जिस दी सतार जगत विच्च हिलाईआ। उह भेव अभेदा खोल्हे खोल्हणहारा, अनभव दृष्टी तों बाहर दए समझाईआ। सतिगुर सूरत सतिगुर दी धार सतिगुर दा प्यार सतिगुर सति होए उजिआरा, नूर नुराना डगमगाईआ।

(२३-१२१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर मूरत सतिगुर सूरत बड़ी मुशकल लभ्भदी, लभ्भ लभ्भ थक्की जगत लोकाईआ। उह खेल अगम्मे रब्ब दी, जो नूर नुराना धुरदरगाहीआ । उहदी कोई काया नहीं वड्डे छोटे कद्द दी, कुदरत दा मालक इक्क अखवाईआ । उह वढुयां टुक्कयां नहीं बधदी, कतलगाह विच्च कतल ना कोई कराईआ। उह बध्धी नहीं किसे शर्म हया लज दी, लज्जया विच्च कदे ना आईआ। उह जुग चौकड़ी लख चुरासी अंदर फबदी, घर घर अंदर डेरा लाईआ। उह भरी नाम खुमारी मदि दी, मधुर धुन दए सुणाईआ। उह सूरत बिन उस दी किरपा तों किसे दे अंदर जोत हो ना जगदी, जागरत जोत ना कोई दरसाईआ।

(२३-१२१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्दी हुक्म अंदर आ गए घेरे, अग्गे सके ना कोई छुडाईआ। धर्म राज दे अग्गे ढह ढह होणे ढेरे, डेरी अवर ना कोई लगाईआ । जे पुछे कोई केहड़े केहड़े, जो बिना पुरख अकाल दे इष्ट रहे मनाईआ। (१६-१२१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इक्क वसे हरि हर थाउँ, आत्म खोजो भाई। दूसर कोई दिसे ना, निरगुण रूप जोत रघुराई। (१६ हाढ़ २०११ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ऐ धरनीए,

जोती जोत सरूप हरि :

जोती आत्मा जोत परमात्मा जो सर्ब आत्मा दा परमात्मा है और जोत सरूप है। सरीर नहीं तन नहीं वज़ुद नहीं माटी ख़ाक नहीं, और उसे परमात्मा नूं, जोत सरूप नूं, निहकलंक किहा गिआ है। किसे इन्सान नूं निहकलंक नहीं किहा गिआ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान :

जेहड़ा परमात्मा जोत सरूप निहकलंक है, उह ही सारयां दा महाराज ते सारयां दा पातशाह है। उह ही सारयां नूं भय विच्च रक्खण वाली समरथ ताकत है। उह ही सारयां दी पालणा करन वाला है विष्नूं रूप हो के और अन्त तक्क रहण वाला भगवान वी है। (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्द गुरू नाता नाल देह, देह शब्द गुरू अखवाईआ । निरगुण सरगुण लग्गे नेंह, दो जहान वज्जे वधाईआ । जिस वेले तन माटी हो जाए खेह, मड़ी गोर विच्च समाईआ। सतिगुर शब्द फेर वी भगतां उत्ते बरख आपणा मेंह, मेघ अमृत आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देह शब्द जोत मिल के आपणी कार कमाईआ। (१६ं-६४३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिना प्रभू दी किरपा तों ध्यान धरया ना जाए विच्च काया बुत्त, काअबे सारे रोवण मारन धाहीआ। (२३-१८०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

""जेहड़े आशक हो गए धुर दे रब्ब दे, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ । तूं ही तूं ही करके सद्दे, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ।"" (२१-४६६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तुसीं बेनन्तीआं रोज़ करो ते सतिगुरू दी तुहाढ़ु अग्गे इक्क अर्ज़, इक्को वार सुणाईआ। सारयां बोलणा ज़ोर नाल गरज, बिनां प्रभू तों सीस ना किसे झुकाईआ।

(२७ पोह श स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ओए जन भगतो, बेड़ी कहे, मेरी मन्न लिओ अर्ज़, बेनन्ती कर के सीस निवाईआ। तुहानूं लोड़ नहीं रही जगत क्रिया दी, तुसां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी इक्को गाउणी तर्ज़, तरीका प्रभ ने दिता समझाईआ। (२७ पोह शै स ७ रात)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ओ प्रभू तेरा किडा वड्डा जेरा, जेरज अंड विच्च वड़ के आपणा आप छुपाईआ। जिस नूं तूं भेज्जया उह सीने ते हत्थ मार के कैहंदा गिआ सभ कुछ मेरा, मुरीदो सिखो मैं ही तुहाढ्ढा पिता माईआ। उह पिता ना मन्नणा जो गुरू अवतार पैगम्बर अन्त हो गिआ ख़ाक दा ढेरा, तन वजूद वेख के सारे रोवण मारन धाहीआ। (२७ पोह शै स ७ रात नूं)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मन्दर मस्जिद मठ शिवदवाले सीस ना किसे झुकावणा, काया मन्दर अंदर आपणे सच्चा गुरूदवार।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिना गुरसिखां सतिगुर दी सारे करदे बदनामी, जो पढ़ के सुण के रस्ता जाण भुलाईआ। उह गुरमुख नहीं गुरू घर दे हरामी, नादी सुत ना कोई अखवाईआ।

(१६-१२६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पुरख अकाला दीन दयाला जिस ने आपणी करनी अज्ज तक्क नहीं दिती किसे अग्गे वेच, वणजारा नज़र कोई ना आईआ। जद आया ते रक्ख के आपणी सेध, निशाने आपणे गिआ चलाईआ। पुरख अकाल सच्चा सतिगुरू नहीं कोई बक्करी भेड, वाड़े विच्च फड़ के जिथ्थे कोई चाहे ओथे बन्द कराईआ। एह ओस प्रभू दी खेड, जो जुग जुग आपणे हत्थ रखाईआ। (५ कत्तक शै सं ५ वरकशाप विच)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

चिढ़ी चिढ़ा कहे ओए राम आ के दे दे शहादत, तेरी ओट तकाईआ । साडी लेखे लग्गी इबादत, पिछली तेरी वंड वंडाईआ। प्रभू नूं कहो आपणयां भगतां दी बदल दे आदत, बिना प्रभू दे सीस ना किसे झुकाईआ। करदे सच सख़ावत, रैहमत नाम वरताईआ । इक्क दूजे दी छड्ड देण अदावत, घर घर ना कोई लड़ाईआ। (२१-१०२२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कत्तक कहे सदी चौधवीं दे मनुशां नालों चंगे ढोर, जो खा पी के प्रभ दा शुकर मनाईआ।

(१ कत्तक शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धुर फ़रमाणा सुण के शब्दी समझे ना कोई ब्यान, विद्या विच्च जगत वडयाईआ। पैगम्बरां दी खुशीआं नाल पढ़न कलाम, परवरदिगार दा कलमा सुणन कोई ना आईआ। पत्थरां वाला तत्तां वाला पूजदे सारे राम, हर घट वस्सया राम ना कोई मनाईआ।

(१६-३३०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सत्त रंग कहण गुरमुखो जे नहीं करनी सच प्रीत, मैनूं दिउ जणाईआ । उह रहे ना संगत बीच, पल्लू जाए छुडाईआ । सोहँ रसन ना गाए सुहागी गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नूं चाहीदी नहीं एह बख्शीश, उह मुखड़ा लउ भवाईआ । फिर वी जान्दयां दी देवे ठोक पीठ, शाबाश कह के दए सुणाईआ। तुहाड्डा निशाना उक्कया ठीक, ठाकर नालों होई जुदाईआ। (२१-२१४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सोया रहे ना कोई अंञाण, बुधी बिबेक दिआं बणाईआ । जिन्हां पत्थरां इट्टां कागजां नूं मन्नयां भगवान, तिन्हां नूं बिनां शहादतां दिआं सजाईआ। (१८-५७१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर शब्द कहे किहदी करोगे पूजा, की सिल पूजस झट्ट लंघाईआ । की इष्ट मन्नोगे दूजा, पत्थरां सीस निवाईआ । की गुरू मन्नोगे पंज भूता, जो जम्मे अन्त मर जाईआ। की दीनां मज़्हबां दीआं गलीआं वेखोगे कूचा, दर दर अलख जगाईआ। की सतिगुर जंगलीं लभ्भे ढूंडा, उच्चे टिल्लयां वेख वखाईआ। (२१-१०५३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो तुसां पिछली कीती आपणे अंदरों कढ्ढणी अमृत वेले सारयां ने कर लैणी दातन, पिछला लेखा रहे ना राईआ । (१ चेत शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कूड़ी क्रिया अंदर सारे फसे, प्रभ भुल्लया बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सिल पाथर पाणी मिटी कलम शाही टेकदे रहे मथ्थे, मस्तक हरि ना कोई निवाईआ। कलिजुग अन्तम मिलदे धक्के, धक्का श्री भगवान लगाईआ। (१४-५२६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिस ने किहा मुहम्मद गौणा, तिस ज़हिमत दए वखाईआ। जिस ने किहा ईसा मूसा संग निभौणा, तिस हिस्सा रिहा मुकाईआ। जिस ने किहा कृष्न ध्यौणा, तिस त्रिलोकी गेड़ा गेड़े विच्च भवाईआ। जिस ने किहा राम दसरथ बेटा इक्क ध्यौणा, तिस जूनी जून भवाईआ। जिस ने किहा राम रमईया एका पौणा, सो लक्ख चुरासी पार कराईआ। जिस ने किहा नानक गोबिन्द गुरू ध्यौणा, तिस देवे फड़ सज़ाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल इक्क मनौणा, दूसर ओट ना कोई तकाईआ । (१०-८१५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

झगढ़ा मुक्क जाए काअबे वाले हज्ज दा, शिवदवाला मन्दर मठ सीस ना कोई झुकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को सजदा, सजदयां दा लेखा दए मुकाईआ ।

(१६-१६८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सीस कहे उह पगढ़ीए आ जा मेरे उत्ते, लज्जया रक्खणी चाईं चाईंआ । मेरे भाग जाग पए सुत्ते, सुत्तयां लिआ उठाईआ। खुशी होई विच्च जुस्से, ज़मीर वज्जी वधाईआ । सीस कहे मैं सुगंध खावां दूसर अग्गे कदे ना झुक्के, जे लथ्थ जावे सी ना कदे सुणाईआ । अज्ज तों पिछले सभ दे पैंडे मुक्के, अवतार पैगम्बर गुरू दा नाता दिता तुड़ाईआ। (२२-६१०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो जे तुहाढ़े कोल आ गिआ कूड़ कुड़िआरा ते शैतान, सरअ सच दी सच नालों तुड़ाईआ। फेर तुहानूं जरूर सतिगुर दे हुक्म भुल्लयां, चुरासी दा भुगतणा पए भुगताण, अग्गे हो ना कोई छुडाईआ। (२२-२८७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लोगो राम पछाणो, कबीर कूके दए दुहाईआ। आपणे अंदर आपणा राम जाणो, बाहिर लभ्भे ना किसे थाईंआ। एका सतिगुर साचा चरन कँवल ध्यानो, धरत धवल दए वडयाईआ। गुर का शब्द मिले बबाणो, साचे राम लए मिलाईआ । (६-६५०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि का मन्दर अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी इट्टां पत्थरां अग्गे करे पुकार, निरगुण इष्ट ना कोई मनाईआ। ग्रन्थी पन्थी होए बेहाल, गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। (१०-७६४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

दर घर साचे गावणा, हरि पातशाह सुल्तान। सति पुरख निरँजण इक्क मनावणा, अबिनाशी करता दो जहान। दूसर सीस ना किसे झुकावणा, अन्तम मिटे सर्ब निशान। पुरख अकाल एका नज़री आवणा, चार वरनां इक्क ज्ञान। एका इष्ट ध्यान लगावणा, साचा इष्ट श्री भगवान । पत्थर कागज़ किसे ना पार लंघावणा, गा गा थक्के वेद पुरान। अञ्जील कुरानां एह समझावणा, साचा नबी देवे सच्चा इक्क ईमान। (६-४४७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पुरख अकाल नूं छड्ड के सृष्टी मन्नदी पत्थर इट्टां, पाहना सीस निवाईआ। अन्त सभ दा कागज कोरा ते लेखा चिटा, प्रभ दे लेखे विच्च ना आईआ। (१ कत्तक शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मानस जाति होई पशू ढोर डंगर, जो प्रभू नूं गए भुलाईआ। नौं दवारे मूल ना लँघण, सुखमन ईड़ा पिंगल पन्ध ना कोई चुकाईआ। हउमे हंगता ढाहे कोई ना कंधन, दूई द्वैत ना कोई मिटाईआ । तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्दन, आत्म परमात्म ना कोई सुणाईआ। इक्क पुरख अकाल नूं करे कोई ना बन्दन, मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरूदवारे सारे सीस निवाईआ । (२२-२६७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एसे कर के गुरू ग्रंथ दी गाथा दिती दस्स, दहि दिशा दिता समझाईआ । एस तों पढ़यां सुणयां मार्ग मिलदा जिथ्थे मिले पुरख समरथ, ओस मंज़ल चढ़ के गुरमुखो दर्शन लैणा पाईआ। जे ऐवें खाली टेकी जाओ मथ्थ, मथ्थे टेक्कयां हत्थ कुछ ना आईआ।
(५ अस्सू शै स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भैणां भाईआ ताईं सुणाओ, पिछली भुल्ल चल बख्शाओ, निहकलंक कल आया जामा पा के। सोहँ शब्द ढोल वजाओ, कलिजुग जीवां कन्न सुणाओ, आपणी रसना खेल करा के। शब्द अमृत घोल पिलाओ । साची दरगाह गुरसिख माण पाओ। आप तरे कुटंब तारया अवरे होर तराओ। पंज जेठ पए ठंड, वरे गंढु गुर घर मनाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस अमरा पद पाओ। (१ माघ २००६ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि संगत तेरा प्यार हरि पी पी रज्जणा, आपणी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अन्तम पड़दा तेरा लोकमात प्रभ कज्जणा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। (७-३१३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर शब्द कहे ऐवें ना करयो हूं हूं, होके नाल सुणाईआ । जिन्नां चिर मैं विच्च ना मिले तूं तूं, मैं तूं विच्च समाईआ । तुहाढ्ढा खुशी ना होवे लूं लूं, घर वज्जे ना सच वधाईआ। ओन्नां चिर प्रभ दे दवारे दी कदे ना भुल्लया जूह, अग्गे पिच्छे कदम ना कोई टिकाईआ। जे मथ्थे टेकणे ते कोटन कोट बाहर वेखयो गुरू, घर घर बैठे डेरे लाईआ। जे आत्म हो के परमात्म नाल जाओ छूह, फिर शर्म हया रहे ना राईआ। आपणे घर दी तुहानूं आपे दस्स दए सूह, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी कार कमाईआ। (१६—६५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

काया मन्दर अंदर दिसे कोई ना सतिगुर शब्द सद्दा, रसना पढ़ पढ़ सारे ढोले जगत सुणाईआ। (२२-१४२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्रहलाद कहे मैं कलिजुग वेख्या कूड़ा, प्रभू काहनूं दिता वखाईआ। मैं मंगण वाला तेरी चरन धूढ़ा, बिन तेरे दरस कोई ना पाईआ । तूं मैनूं वखा दिता लोकी मन्नदे ऊड़ा ऐड़ा, अक्खरां पत्थरां सीस निवाईआ । पुरख अकाल तैनूं बणा के चूड़ा, घर विच्चों सभ ने दिता कढ्ढाईआ । तेरा तक्क के खुश नहीं कोई नूरा, पढ़ पढ़ विद्या ढोले जगत सुणाईआ।
(२१ चेत शै स ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एका धाम अकट्ठे बहणा, दोए मूरती एका जोत जगाइंदा। गुर संगत गुर मन्नणा कहणा, दे मत आप समझाइंदा । कलिजुग माया विच्च ना वहणा, गुर पूरा पार कराइंदा। लक्ख चुरासी भाणा सहणा पैणा, ना कोई मेट मिटाइंदा। अन्तम नाता तुटे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण ना कोई बचाइंदा। (०७—५१-५२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुर संगत वड्डी वड्डिआई विच्च संसार है। सारे रल मिल बहिणा भैणा भाई, ना बणना जीव गवार है। (०४ ६५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धंदिआं विच्च गाओ जस , बंदिआं विच्चों बन्दगी इक्को भाईआ । गंदिआं विच्चों पिच्छे जाओ हट, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। मन नीवां कर के जाओ ढठ्ठ, ढठ्ठयां लज्जया कोई ना आईआ। माणस देही साचा सौदा दमड़े लउ वट्ट, काची माटी अन्त कम्म किसे ना आईआ । (१४-४१६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

साचा तत्त शब्द गुर ज्ञान, गहर गम्भीर वड्डी वडयाईआ । मूरख मूड़ बणाए चतर सुजान, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। (१०-८१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कलिजुग कहे, गोबिन्द किहा, जे मन्नयो ते मनओ पुरख अबिनाशी, बिना पुरख अकाल दे सीस ना कोई निवाईआ। (२१-१५४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एका धाम अकट्ठे बहिणा, दोए मूरती एका जोत जगाइंदा। गुर संगत गुर मन्नणा कहणा, दे मत आप समझाइंदा । कलिजुग माया विच्च ना वहणा, गुर पूरा पार कराइंदा । लक्ख चुरासी भाणा सैहणा पैणा, ना कोई मेट मिटाइंदा। अन्तम नाता तुटे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण ना कोई बचाइंदा। (०७—५१-५२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख गुरसिख किसे नाल करे ना कोई धोखा, सच सुच इक्क समझाईआ। माणस जन्म प्रभ मिलण दा मौका, लक्ख चुरासी विच्चों नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया अंदर ना होणा थोथा, होछी मत ना कोई वड्डिआईआ। (१५-८१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमत वेख सज्जण सुहेले, सो सज्जण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म जुग जुग मेले, जुग करता आप जणाइंदा। प्रभ दे नाम जपण तों जेहड़े वेहले, ओन्नां झगढ़े विच्च रखाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेले, गुरमुख मनमुख दोवें धार चलाइंदा।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुर का रूप आदि जुगादि इक्क, निरगुण नूर रुशनाईआ। बाहरों पंज तत्त चोला रिहा दिस, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई वडयाईआ। अन्तर आत्मा दर्शन पाया जिस, बाहर वेखण कोई ना जाईआ। जगत लबास कलिजुग वन्डया हिस, हिसा शहनशाही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुरदेव इक्को रंग वखाईआ। (१२—७७५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

साचा अमृत हरि वरताए, अमृत बरखा लाईआ। अमृत नीर आप हो जाए, गुरमुख दुँध विच्च समाईआ। गुरमुख दुध्ध नज़री आए, गुर पूरा नीर दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां हरि संगत एका रंग रंगाईआ। (७–३१४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

.

साचा हुक्म सुणो हरि संगत, सच सच समझाईआ। अग्गे वेखणा नहीं कोई पंडत, किस्मत हत्थ ना किसे फड़ाईआ। सीस निवाउणा नहीं किसे सन्त, जो विद्या ढोले गाईआ। आसा रक्खणी नहीं स्वर्ग जन्नत, बहिश्त कम्म किसे ना आईआ। पिछला ढोला नहीं गाउणा मन्नत, पूजा पाठ ना कोई जणाईआ। पुरख अकाल मनाउणा इक्को कन्त, जो गुर अवतार पैगम्बरां रिहा पहुंचाईआ । (१ चेत श स ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिख गुरसिख दी चुग़ली निन्दया ना करनी भूल, सच सुच्च झोली पाइंदा। प्रभ मिलण दा इक्को असूल, गुरसिख असलीयत रूप वटाइंदा । जो सतिगुर बचन करे कबूल, सो गुरसिख हरि संगत सेव कमाइंदा । (१३-६६६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सो वड्डा जिस प्रभ जोत जगाए। सो वड्डा जिस भरम चुकाए। सो वड्डा जिस सोहँ शब्द सुणाए। सो वड्डा जिस गोझ ज्ञान खुल्ह़ाए। सो वड्डा जिस रंगण नाम चढ़ाए। सो वड्डा जिस प्रभ दरस दिखाए। सो वड्डा जिस प्रभ चरनीं लाए। सो वड्डा जिस जन्म जन्म दी सोझी पाए । सो वड्डा जिस भिक्खया नाम दी पाए। सो वड्डा जिस प्रभ कर्म कमाए। सो वड्डा जिस नर नरायण माण दवाए। सो वड्डा जो संगत रल जाए। सो वड्डा जो चरन कँवल विच्च सेव कमाए। सो वड्डा जिस महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ रखवाए। (५ जेठ—२००७ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

संगत साची जाणीए, जिस अन्तर हरि निवास। संगत साची जाणीए, जिस आत्म सच धरवास। संगत साची जाणीए, जिस प्रभ मिलण दी आस । संगत साची जाणीए, जिस देवे दरस पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

उह परमात्मा, जिस ने जुग चौकड़ीआं तबदील कीतीआं ते बणाईआ होईआं ने उह कदी किसे इन्सान नाल ते बुद्धि वाले नाल ते अकल वाले नाल गल्लबात नहीं करदा। प्रभू, उहदा इक्क मशवरा है सलाह है दलील है विचारधारा है करनी दा करतव है, जां खेल खेलणा है । उह आपणे सतिगुर शब्द नाल सलाह करदा है, होर किसे नाल नहीं करदा । जेहड़ा सतिगुर शब्द कदे जम्मया मरया ते नाश नही होया। दुनियां दे नाल परमात्मा दा कोई सलाह मशवरा नहीं। (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इक्क दूजे नाल क्यों रहे लड़, मनमत करे लड़ाईआ। गुर शब्द डोरी लउ फड़, मनमती दिउ तजाईआ । साचे पौड़े जाओ चढ़, सतिगुर नानक गिआ समझाईआ। जींवदयां ही जाओ मर, मरनी इक्को इक्क दरसाईआ। आपणी सुरती शब्द डोरे लउ फड़, मन वासना उठ ना दहि दिश धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमत इक्क वखाईआ। (१४-१७०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

संगत साची जाणीए, आत्म अन्तर रंग । संगत साची जाणीए, घर वेखे सेज पलघँ। संगत साची जाणीए, घर सुणे नाद मरदंग । संगत साची जाणीए, आपणा दुआरा आपे जाए लंघ। संगत साची जाणीए, अठ्ठे पहर रहे परमानंद । संगत साची जाणीए, जिस सतिगुर सुणाए सुहागी छन्द । संगत साची जाणीए, जिस अन्त ना आए कंड । संगत साची जाणीए, जो वसे उप्पर ब्रह्मण्ड। संगत साची जाणीए, जित आत्म होए ना रंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वसे संगत संग। (१०-८२५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिना सतिगुर शब्द तों गुरू रहे ना कोई तन ख़ाकी, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ । बिना परम पुरख परमात्मा तों लहणा देणा चुकाए कोई ना बाकी, बकाइदा दिता सुणाईआ । बिना गोबिन्द दे अमृत जाम तों बदले ना किसे दी हयाती, जीवण विच्च जीवण ना कोई बदलाईआ। सभ नूं मन्नणी पैणी परम पुरख दी आखी, जिस गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। (२१-३०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

संगत साची जाणीए, जिस अन्तर हरि निवास। संगत साची जाणीए, जिस आत्म सच धरवास। संगत साची जाणीए, जिस प्रभ मिलण दी आस । संगत साची जाणीए, जिस देवे दरस पुरख अबिनाश । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश। (१०-८२५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्द गा गा थक्के पीर फ़कीर, पैगम्बर ढोला इक्को गाईआ। सतिगुर शब्द जुग जुग घत्ते वहीर, लोकमात वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ । सतिगुर शब्द सच सतिगुर तस्वीर, नूर नूराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक्क समझाईआ। (१३—५८५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सच सिँघासण गुरमुख आत्म गृह, दूजा नज़र कोई ना आईआ । जिस घर स्वामी ठाकर हो के बहे, निरगुण जोती जाता डगमगाईआ । जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होवे लय, मरन जन्म विच्च गेड़ ना कोई भवाईआ । आपणा भाणा आपे सहे, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। शब्दी हुक्म गुरमुखां सच कहे, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप सुणाईआ। (२०-१२०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सभ दे नाल सची करनी सिखो प्रीत, बिन प्रीती प्रीतम मेल ना किसे मिलाईआ। पिछली सभ दी पिच्छे गई बीत, अग्गे पुरख अकाल शहनशाही सम्मत दिता लगाईआ। (१८-६५६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्द गुरू कहे मैं अंन्हा बोला, सुणन कुछ ना पाईआ। भेखाधारी वसां विच्च काया चोला, तत्तां विच्च सोभा पाईआ । जिस वेले चाहवां ओसे वेले आपणी धार दा बोलां बोला, अनबोलत हो के आपणा राग सुणाईआ। जे मैं कह दिता प्रभू मौला, ते सारयां मौला मौला कहि के रौला दिता पाईआ । जे मैं किहा सतिनाम, ते सति सति सारे रहे गाईआ। जे मैं किहा वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू, ते वाहवा गुरू दी सारे करन वडयाईआ। ते जे मैं कहां ओस प्रभू दा कोई नाम नहीं कोई निशान नहीं ते तुसीं

किस दा गौंदे ढोला, उह फेर सारे दिआं भुलाईआ । जे मैं कहां उह तक्कड़ वाला तोला, जे मैं कहां धुरदरगाह दा दूला, जे मैं कहां उहदा हुक्म होवे माअकूला, जे मैं कहां उह सारयां अंदर फल्लया फूला, फेर हत्थ जोड़ के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

शब्द कहे मैं राम बण गिआ, सीता पिच्छे भज्जया वाहो दाहीआ। शब्द कहे मैं काहन बण गिआ, राधा पिच्छे बंसरी रिहा वजाईआ। शब्द कहे मैं मूसा बण गिआ, मूंह दे भार रगड़ के नक्क दिता घसाईआ । शब्द कहे मैं ईसा बण गिआ, गल फासी लई लटकाईआ। शब्द कहे मैं मुहम्मद बण गिआ, कलमयां विच्च दिती दुहाईआ। शब्द कहे मैं नानक बण गिआ, गरीबी वेस कर के धरती कदमां नाल मिणाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द बण गिआ, खण्डा खड़ग चमकाईआ । शब्द कहे मैं सभ नूं छड्ड गिआ, शब्द शब्द विच्च समाईआ । शब्द कहे मैं सभ कुछ बण गिआ, आपे पिता ते आपे माईआ। शब्द कहे मैं ताणा तण गिआ, लक्ख चुरासी नज़री आईआ। शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्म शिव घाड़त घड़ गिआ, संसारी भण्डारी सँघारी नाउँ रखाईआ । शब्द कहे जे मैनूं तक्को ते मैं सारयां विच्च वड़ गिआ, बिना मेरे तों जींदा नज़र कोई ना आईआ। शब्द कहे मैं अंदर काया मन्दर ते सभ दी चोटी उत्ते चढ़ गिआ, सिखर बहि के आपणा आसण लाईआ । शब्द कहे मैं मूरख मूढ़ बण गिआ, अकल विद्या ना कोई चतराईआ । शब्द कहे मैं सभ कुछ पढ़ गिआ, मेरे पढ़ायां तों बिनां गुर अवतार पैगम्बर किसे नूं समझ किछ ना आईआ। (८-८२६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिना शब्द तों प्रभ दा नहीं कोई जांनशीन, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। सतिगुर रूप ना नर ते ना मदीन, नारी पुरख नज़र कोई ना आईआ। (१६-१८०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमुखो कोई प्रभू तुहाढ़े वरगा नहीं कठोर, जो दर आया नूं देवे दुरकाईआ । जे सच समझो तुहाढ़े अंदर वसां तुसां फेर वी नहीं जाणी लोड़, लोड़ां जगत पूर कराईआ। (१६-८७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ । हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढे तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ । (१६-११२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर हुक्म ते सदा करो यकीन, भुल्ल विच्च भुल्ल कदे ना जाईआ । इस तों वड्डी नहीं कोई होर तालीम, जगत सिख्या कम्म किसे ना आईआ। (२२-६१४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गोबिन्द शब्द धार किहा मैनूं मन्नयो शब्द ग्रंथ, ग्रंथ गुरदेव नज़री आईआ। ओस मंज़ल नूं केहड़ा समझे विच्चों पन्थ, पन्थक वाले आपणी विद्या विच्च करन पढ़ाईआ। जिस मंज़ल नूं लख नहीं सके कोटन कोट पांधे पंडत, सो मंज़ल गोबिन्द गिआ जणाईआ। पंजां तत्तां वाला गुरू ना मन्नयो क्योंकि पुरख अकाल लए अवतार अन्त, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। (२४ अस्सू शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमुखो किते समझ ना लिओ डरामा, धुर दा निशाना रिहा जणाईआ। किते जाण ना लिउ एह पंजां तत्तां वाला इन्साना, पूरन सिँघ कह के सारे रहे गाईआ। जे समझो ते एह विष्नूं भगवाना, तुहाड्डा पिता माईआ । (२०-२७६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जदों खुशी विच्च आवे ते सचखण्ड विच्चों सुणावे, ते सतिगुर शब्द संदेशा लै के आवे, तत्तां वाले सरीर विच्च टिकावे, उह फिर अवतार पैगम्बर गुरू मुख रसना नाल गावे, ते अक्खरां दे अक्खर बणा लिखाए, ते कागज उत्ते टिकाए, ते ओसे दा ध्यान ओसे वल लगाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। (२३—५२७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

नाम जपण वाले वेखदे रैहंदे वक्त, दरस करन वाले दरस कर के आपणा आप पार कराईआ । एहो नाम दा ते मेरे मिलण दा फरक, फिकरे इक्को विच्च समझाईआ । साख्यात सतिगुरू छिन्न विच्च चढ़ा दए फर्श दे उत्तों अर्श, अर्श तों फर्श एह मेरी बेपरवाहीआ। (२४ अस्सू शै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमुखो पड़दा लाह के वेखो काया माटी कच्च, कच्चन गढ़ सुहाईआ। तुहाढ़े अंदर बैठा पुरख समरथ, घर विर आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ। हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढे तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ। (१६-११२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सोहँ अक्खरी जाप जगत दा गाउँणा, सिफ्ती ढोले गाईआ। भगतां सोहँ रूप सरूप विच्च समाउँणा, आपणा आप मिटाईआ। घर परमात्म इक्को बहाउँणा, सेज सुहञ्जणी जो सुहाईआ । बिन अक्खीआं दर्शन पाउँणा, निज नेत्र नैण खुल्ह़ाईआ । बिन सीस सीस झुकाउँणा, निव निव लग्गणा पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सच प्रीती विच्च मनाउँणा, प्यार मुहब्बत विच्च मंग मंगाईआ। (१६ माघ शै सं ११)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कल कलकी लै अवतार, कलमा इक्को रिहा पढ़ाईआ । जन भगतो बेड़ा कर जाए पार, जो चल आए सरनाईआ। सौंदिआं जागदिआं पंज वार बोलया करो मेरा जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धिआईआ। (१८-६७२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अज्ज तों अग्गे जेहड़ा गुरमुखां घर होए विहारा, उस दी रीत इक्क दरसाईआ। उह गुरमुख सुचा हत्थ फड़े इक्क निशाना, सत्त रंग नजरीं आईआ। उस दा वसदा रहे मकाना, सतिजुग सारे लभ्भण चाईं चाईंआ। (१३ पोह २०२१ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एह गुरमुख सच्चे साध जे, जिन्नां मिल्या ग़रीब निवाज़। एह सदा सदा सद सति विच्च विस्माद जे, जो बिन जिह्वा रहे आराध। एन्नां प्रभू सवारे काज जे, जो हरि सरनाई गए लाग। सच पुच्छो बिन करनीउँ बिन कमाईउँ बिन नाम बिन शब्द बिन किरत आपणे हत्थ विच्च पकड़ी वाग, चारों कुण्ट आप फिराईआ । मेहर नज़र नाल दुरमत मैल धोता दाग़, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। (१६-७६०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सत्त रंग कहण ..... हुण असीं दो जहानां फिरीए उडदे, शाह सुलतानां दईए जगाईआ। जन भगतो तुसीं क्यों नहीं कट्ठे हो के तुरदे, वेखो तुहाढ्ढे सामूणे असीं खलो के दईए गवाहीआ। असीं पूरब विछड़े चिर दे, प्रभ मेला लिआ मिलाईआ। जिस तरां असीं मालक बण गए धुर दे, जगत चीथड़ मिली माण वडयाईआ। तुसीं ते माणस तुरदे फिरदे, क्यों ना चल के दर्शन पाईआ। एहो जिहे समें मौके फेर नहीं जुड़दे, नाले गोबिन्द नाले हरि जू घर हरि मन्दर दए बणाईआ। (१५ पोह २०२१ बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पुरख अकाल दीन दयाल भगतां दी आत्म सेज सुहौणी धुर दी मंजी, सिँघासण इक्को इक्क वडयाईआ। (२१-१५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्रभ वस्सया नहीं कदे बाहर सवा गिट्ठों, मेरूडण्ड दए गवाहीआ । कलिजुग वेले अन्त आपणा आप नजिट्ठो, दूजे सिख्या ना कोई समझाईआ। (२१-१११२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिस ने स्वाणी मच्छी डड्ड, उह मूंह लउ खुलाईआ। जिस ने चुरासी विच्च फिरना जग, उह अंदरों सीस ना कोई निभाईआ। जिस ने मात गर्भ विच्च सड़ना अग्ग, उह अक्खां लउ बदलाईआ। जिस ने बणना कॅग, उह निन्दिआ लउ कराईआ। (१७ हाढ़ शै सं ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बुरा कर्म जिस जन मिटौणा, पहलों लए सरन सरनाईआ। दूजे सतिगुर शब्द धिऔणा, माण मोह चुकाईआ। तीजे मस्तक धूड़ लगौणा, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। चौथे दर दर दरवेस अखवौणा, दरदी दुख वंडाईआ । पंचम नाता मोह तुड़ाउणा, छेवें छप्पर मोह तजाईआ। सत्तवें सति सतिवादी ओट रखौणा, अठां तत्तां भेट कराईआ । नौं दुआरे पन्ध मुकौणा, दसवें बूझ बुझाईआ । सतिगुर साचे फिर दर्शन पौणा, निरगुण निराकार एका नज़री आईआ। जिस नूं हरि जू आप मनौणा, राती सुत्तयां लए उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ तारू तारू सिँघ एका बूझ बुझाईआ। (११-५८३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पुरख अकाल दीन दयाल आपणा संदेशा जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां देवे ना कदे ज़बानी, कलम शाही लेखा कागज नाल वंड वंडाईआ। (१६ ८५६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

उह गुरसिख दा दिसे कातल, जो वेख के मुख भुआईआ। (२४ चेत शै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिथ्थे पुरख परमात्मा नूं संबोधन कीता जोत दी धार ने तत्तां वाले सरीर दा नाम दा रूप धारन करके। फिर दुनियां नूं संबोधन कीता, कि ऐ मनुष्ष ऐ इन्सान। श्री गुरू नानक देव जी ने संसार विच्च ऐसा मार्ग प्रसिद्ध कीता, कि कलिजुग दा कुकर्म भृष्टाचार ते अत्याचार दा समां आ रिहा संसार पता नहीं कलिजुग किस तरीके नाल भुला देवे। पर थोड़ी जही मरयादा काइम कीती कि सतिगुर कौण है, सतिगुर किस नूं किहा गिआ ? सतिगुर नूं प्रतीत करौण वास्तो साहिबा ने आपणे जीअ ही, जोत अते शब्द दी धार भाई लैहणे विच्च रक्ख दिती। दुनियां नूं संबोधन कर दिता ऐ प्रेमीउँ पिआरिओ, ऐ जगिआसूओ, ऐ संसारीओ, सतिगुर शरीर नहीं है, सतिगुर परमात्मा दी ताकत है। जेहड़ी मैं आपणी शक्ती धुर तों लै के आया सां, आह मैं देवी दे पुजारी अंगद विच्च रक्ख रिहा हां और उस नूं भरभूर बणा दिता । गुरू अंगद साहिब जी ने किरपा कर दित्ती, ७२ साल दी आयू दे विच्च सेवादार ते मेहर कर दिती गुरू अमरदास नूं बणा दिता। एसे तरा जोत ते शब्द दी धार दसां जामिआं तक्क चली गई और संसार दे विच्चों संसा कढ़ु दिता बई जिस सरीर दे अंदर परमात्मा दी शब्द दी धार आ जावे, उह आपणी जोत दा प्रकाश रक्ख देवे, उस शरीर दा सतिकार हो सकदा है, लेकिन सतिगुरू शब्द है, शरीर सतिगुरू नहीं है। एह गुरू नानक देव जी ने फैसले वास्ते एह सारा खेल खेलिआ।

अवतार पैगम्बर गुरु कैंहन्दे ने, ऐ धरनीए, असीं सचखण्ड विच्च बैठे होए ऐस वेले दे मनुश ते इन्सान ने, ऐस वेले दीनां मज़ूबां दी धार ने, साडी कमजूत नहीं कोई रहण दिती। साडे ग्रन्थ शास्त्र साडे पवित्र जितने वी सन धुर दे फ़रमाण, उहनां नूं हट्टां बजार दे विच्च पैसिआं ते वेचणा शुरु कर दिता है । नाले साडे ग्रन्थां नूं गुरू मन्नदे आ, मथ्थे टेकदे ने, निमस्कारां जनारदनां बन्दना ते सजदे करदे ने, नाले हट्टीआं दे विच्च उहनां नूं सौदिआं वागूं कीमतां दे उत्ते वेच दिता है। जिस गुरू दी कीमत पै गई, उस गुरू दा सतिकार की रहि गिआ। गुरू दी कीमत कदी नहीं पै सकदी। सतिगुरू दी कीमत कोई चुका नहीं सकदा। साडी दशा जो हो रही है असी वेख रहे हां कि सानूं हट्टां बज़ारा दे विच्च कीमत तों वेचिआ जा रिहा है।

उह परमात्मा जिस ने जदों वी संसार विच्च नवां मार्ग लाया ए, किसे अवतार पैगम्बर गुरू नूं भेजिआ ए, उहनूं पिछली कथा कहाणी नहीं उहनूं कही । पिछले ग्रन्थां शास्त्र नूं पढ़न वास्तो नहीं उहनूं किहा। उह जदों आया, उह नवां संदेश नवां फ़रमाण नवां नाम नवां कलमा भेजिआ है और उस नूं संसार अंदर प्रसिद्ध कीता है। एह सतिगुरू ते धरनीए शब्द है जिस ने बहु रूपां विच्च खेल खेलिआ है । असीं वी उसे दा रूप बणे हां। अवतार हां पैगम्बर हां गुरू हां, सांईं उसे दी ताकत उसे दी शक्ती लै के सारा खेल होया सी। (सतिगुरां दुआरा कीते अरथां विच्चों)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरमुखो वेला औणा तुसां इक्क दूजे दे प्यार नूं तरसणा, बिन मेरे प्यार हत्थ किसे ना आईआ। तुहानूं कुकर्म करदिआं अग्गे हो के नहीं वरजणा, हुक्म दे ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा रिहा दृढ़ाईआ।
(२४ चेत शै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अमृत कहे होई साची वरखा, बाणी अमृत नज़री आईआ। (१८-४३०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो प्रभू दा अमृत कदे ना लभ्भयों बाहर किसे कटोरे विच्च बाटी, किरपा नाल सभ दे अंदर दए चखाईआ। तुसां ते सिरफ हुक्म दी मन्नणी आखी, पार करना उहदी वडयाईआ। (२१ ७५५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिध्धर तक्को भगत भगवान भगवान भगत दे प्यार दे सत्थर लथ्था, दूजी सेज ना कोई हंढाईआ। प्रभू कदी खुश नहीं होया टेकिअयां मथ्था, नक्क जिमी उत्ते रगढ़ाईआ। उह कदी मन्नया नहीं ज़बान वाली करदिआं कथा, कथनी नाल ना कोई चतराईआ । उह कदी रीझया नही दीनां मज़बां बणाया जथ्था, जथ्थयां वंड ना कोई वंडाईआ। उह कदे खुश नहीं होया नप्पया घुट्टयां हत्थां, हसत कँवलां नाल दबाईआ। उह कदे हत्थ नहीं आया करोड़ा रुपइआं लक्खां, अरबां ख़रबां मिलण कदे ना पाईआ । उह जदों मिल्या भगतो ते मिले वांग बिदर कुल्ली कक्खां, गरीब निमाणिओ तुहाढ्ढी काया कुली विच्चों नज़री आईआ।
(२३ २८५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गल्लीं बातीं देवणहारा शाह कंगाल, भंडारा गल्लीं बातीं भराईआ। गल्लीं बातीं आवे जगत ज्वाल, गल्लीं बातीं दीन दुनी करे तबाहीआ। गल्लीं बातीं भगतां करे संभाल, गल्लीं बातीं होए सहाईआ। गल्लीं बातीं मेला मिले भगत भगवान, बिनां गल्लां बातां तों शब्द नाद ना कोई शनवाईआ। गल्लीं बातीं कूड़ी काया माटी दिसे खाल, गल्लीं बातीं वज्जदी रहे वधाईआ। बिनां गल्लां बातां तों अज्ज तक्क खेल होया नहीं जहान, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। नाता तुट्टे जगत छुट्टे गल्ल फेर सुणे कोई ना कान, बिनां गल्ल तों गुलामी सके ना कोई कटाईआ। (२२-१०८१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गल्लां बातां शब्द धार दी खुशी, खुशहाली विच्च प्रगटाईआ। गल्लां बातां विच्च साहिब दी रुची, बिनां गल्लां बातां तों रचना रच ना कोई जणाईआ । गल्लां बातां विच्च प्रभ दी मंज़ल मिले उच्ची, बिना गल्लां बातां तों हत्थ किछ ना आईआ। (२२ १०८१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरसिखो याद कर लउ सिख नूं सिख तरसदा मर गिआ विच्च सरसा, सिख नाल सिख सक्कया ना कोई मिलाईआ। उस नूं कोई बहुता नहीं बीत्तया अरसा, थोड़ा समां रिहा जणाईआ। हुण वी तुहाढ़े उत्ते पैण वाला पर्चा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाढ़े विच्च निन्दया वाली होवे कदे ना चर्चा, जो निन्दक होवे उस नूं बाहर कढ़ु के दिउ वखाईआ। (२२-६८५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

तुहाढ़े वास्ते मेरा सचखण्ड वड्डा महानी, मेरे वास्ते मेरे चरनां दी धूड़ छार नज़री आईआ। तुहाढ़े वास्ते मेरा नाम मेरा कलमा वड्डी उच्ची मंज़ल रुहानी, मेरे वास्ता मेरा छोटा जिहा शब्द सुत तुहानूं गल्लां रिहा सुणाईआ। (२१-५४२-५४३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुरूआं अवतारां पैगम्बरां दी जगह घर घर आपणे बच्चिआं दी मनाउण डह पैण बरसी, साध सन्त उन्हां दे घर जा जा के पकवान लैण खाईआ। एदू वड्डी होर की होणी गरकी, गुरूआं दी जगह मल मूतर वाले बच्चे घर विच्च आपणे गुरू लैण बणाईआ। (२१-७६३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भावें विद्या पढ़ लउ ते चढ़ जाओ उत्ते असमान, अभिमान विच्च ना कोई चतुराईआ। सतिगुरू तों अग्गे जिंनां चिर ना मिले भगवान, जोत विच्च जोत ना कोई समाईआ। एहो शास्त्र वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी दए ज्ञान, हरफ़ हरूफ़ां विच्च सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्ह़ाईआ। (२१ ०२६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिजुग मानण दा जिन्ह़ां गुरसिखां चा, आसा मनसा विच्चों प्रगटाईआ। सो दिवस रैण घड़ी पल अठ्ठे पहिर पुरख अकाल दा जप्पओ नां, माया ममता मोह चुकाईआ। काया मन्दर अंदर सुहाओ सच्चा थां, भगत दवारा सोभा पाईआ। रसना लाओ ना सूर गाँ, अमृत रस पी के नाम खुमारी लैणी चढ़ाईआ। हँस बुधी रहे ना कां, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। देवे वड्डिआई परम पुरख सच्चा शहनशाह, शाह पातशाह आपणा रंग रंगाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल भगत वछल किरपाल कोट जन्म दे बख्श गुनांह, पतित पुनीत पवित दए कराईआ। (१६ ७३८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर शब्द सुणना ज्ञान, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। इक्को ब्रह्म होवे ध्यान, पारब्रह्म नज़री आईआ। सोहणा मन्दर सोहे मकान, काया माटी रंग रंगाईआ। जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला करे किआम, सच सिँघासण डेरा लाईआ। ठाकर स्वामी मिलणा होवे असान, अहिसान सिर ना कोई चढ़ाईआ। जन भगतो कोट जन्म भावें लाउँदे रहे दीवान, बिना प्रभ दरस लेखा मात ना कोई मुकाईआ। हरि के नाम पिच्छे भावें हो जाओ बदनाम, बदी नेकी आपणा रूप दए बदलाईआ। (१८ माघ सै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

चिटे हँस ना बणिओ काग, बगलिआं वाला रूप वटाईआ । तुहाढ़े पिच्छे श्री भगवान नूं ना लग्गे दाग़, जो भागाँ दा हिसा तुहाढ़ी झोली पाईआ। तुहाढ़े नाल मिल के सृष्टी दा बदल देणा रवाज, दीन मज़्ह़ब दा लेखा देणा चुकाईआ। (१८-६७२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

निरगुण निरगुण सरगुण धार सदा रहे कोल, घर विच्च घर गृह विच्च गृह मन्दर बैठा सोभा पाईआ। मनूआं ना पावे शोर, चार कुण्ट दह दिशा ना उठ उठ धाईआ।

साचा दरस अकस बिना नहीं कोई होर, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दरस, दास्तान पिछली वेख वखाईआ।
(१६ ८५५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

साहिब सुल्तान साचा दस्सया इक्को रोज़ा, जिस रोज़े विच्च जूठ झूठ रसना कोई ना लाइंदा। उस रोज़े विच्च सदा मौजां, मौजूदा हो के दरस दिखाइंदा। उस दी खोजे ना कोई खोजा, भरमे भरमी सर्ब भुलाइंदा। (१८-७८०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ओ गुरसिखो छोटी जिही सिखो जाच, हौली हौली दिआं बताईआ। सभ कुछ छड्ड के चरन कँवल बंधा लउ नात, नाता बिधाता सके ना फेर तुड़ाईआ। इक्को वार कह दिउ असीं तेरी ज़ात, तूं साडा बेपरवाहीआ। फेर गुरमुख कोई ना रहे नार कमज़ात, घर घर सुहागण नज़री आईआ। सौहरे पेईए प्रभ दे के अगम्मी दात, घर ख़ज़ाना दए भराईआ।
(१६ ६४२ ६४३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

निरगुण जोत धुर दी मात, पिता मात इक्को रंग समाईआ। कवार कन्नया उस नूं गिआ आख, जिस दा कन्त बिना बेअन्त नज़र किसे ना आईआ। सच दवारे रक्खे वास, संबल आपणा डेरा लाईआ। (१६-५३१-५३२)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जेहड़े रसना जेहवा तेरे सिफ्त दी पढ़ के किताब, आपणा नाम रहे वडयाईआ। सृष्टी नूं चढ़ौंदे जाण चप्पू जहाज, चप्पू आपणा नाम लगाईआ। अन्त अखीरी उहनां दा खोल्ह दे पाज, परदा रहण कोई ना पाईआ। बिन हरिनामे खाली करदे लाश, साढे नौं वक्त सुहाईआ। माया ममता वाली वेख के खाहिश, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। दस दस हज़ार जन्म तैनूं कर ना सकण तालाश, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। दरिंदिआं कोलों कटौणा मास, परिंदिआं वाला रूप बणाईआ । जम दी पौणी गल विच्च फांस, राए धर्म हत्थ फड़ाईआ। सभ नूं भुल्ल जाए सुराही पैमाना ग्लास, गलाफ तन दा देणा बदलाईआ। वेखीं प्रभू किते मेहर विच्च आ के ना करीं मुआफ, गुस्ताख़ां नूं सजा देणी भुगताईआ। जेहड़ा अंदरों बाहरों कर ना सक्कया अदाब, सिर आपणे छत्तर झुलाईआ। भुंन के खांदे रहे कबाब, सलाखां उत्ते चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

पंज आब कहे प्रभू झूट्ठयां साधां दी वेख लिस्ट, बावन लक्ख नज़री आईआ। जिन्नां ने भुम्लया अन्तर तेरा इष्ट, बाहरों आपणा आप रहे वडयाईआ। त्यागी हो के भोगण गृहसत,

कूड़ कुड़िआरा बंधन पाईआ। काम त्तोध दा पा के इशक, तेरे नाम दी करन पढ़ाईआ। अन्तर वेख्या ना किसे दृष्ट, पुशत पनाह दो जहान हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा दे मुकाईआ। (१८ ५७१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जे कोई करे तेरी रीस, लक्ख चुरासी विच्च दे भवाईआ। ना कोई कलमा याद रहे हदीस, आपणा नाम देणा भुलाईआ। जिस वेले चार जुग अगले जाण बीत, फेर गोबिन्द नाल मिलाईआ। चुरासी चुरासी चुरासी जामे जामे सभ नूं देणे विच्च कीट, पतंगयां विच्च पर ना कोई लगाईआ। साफ बुद्धि रहे कोई ना अतीत, नेत्रहीण देणे जणाईआ। दुक्खां विच्च मारदे रहण चीक, सांतक सति ना कोई कराईआ। सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग तेरे शब्द गुरू दी करदे रहण उडीक, बिन गोबिन्द नज़र कोई ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को तेरे विच्च तौफीक, तारीफ आपणी देणी समझाईआ।

(१६–८६४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धुर दी खेल कहे प्रभ दे दे सच संदेशा, सद्दिआ वाला सुणाईआ। समां कहे मैं बदल के आया आपणा वेसा, सोहणा रूप प्रगटाईआ। सभ दा लहणा चुकावां लेखा, पिछली लिखत दिआं भुगताईआ। अग्गे नूं सभ दा मुका के ठेका, धुर दा आपणा हुक्म मनाईआ। बेशक भावें कोई आया अगेता भावें पछेता, पिछड़यां नूं अगलयां नाल मिलाईआ। तेरा खेल जेहड़ा अजे तक्क किसे नहीं वेखा, उह गुरमुख वेखण नूं बैठे राह तकाईआ। हुक्में अंदर बदल दे रेखा, रिखीआं मुन्नीआं फड़ फड़ दे हिलाईआ। परदा लाह दे मुल्लां शेखा, शेखी सभ दी दे गवाईआ। तेरे नाउँ दा इक्को एका, इक्क एकंकार तेरी वड वडयाईआ। तेरा हुक्म देश परदेशा, शब्द शब्दी नाल जणाईआ। जिन्नां तेरे नाम वेचण दा फड़िआ पेशा, तिन्नां नूं पेशे वाली वेसवा फेर बणाईआ। मस्तक लिखदे विकार हमेशा, छेती दरस करन कोई ना आईआ। मरन तों पहले साढे तिन्न साल हड्डां विच्च पै गिआ रेशा, तड़फ तड़फ के आपणा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। (१८—५७३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिस वेले साहिब दा लग्गे सच्च दरबार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। नौं सिख रहण पहरेदार, नौं दुआरे सेवा लाइंदा। जो जन बोले अंदर बाहर, फड़ बांहों बाहर कढाइंदा। (१४–७२४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सच संदेसा श्री भगवान, भगवन आप जणाईआ । दर औणा होए परवान, जो दर दरवाजे सीस झुकाईआ। लेखा पढ़े महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सजदा सीस झुक करे सलाम, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। दरवेश बरदा बणे ग़ुलाम, गुरबत रहे ना राईआ । नेत्र नैण करे ध्यान, अक्ख पलक ना कोई वडयाईआ। नज़री आए श्री भगवान, बेनज़ीर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाईआ। (१४-८५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पात्थर पाहन करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। बिन तुध चरन ना मैनूं कोई होर माण, पूजा पाठ ना मोहे भाईआ। तेरा दरस मंगाँ श्री भगवान, दे दरस मैं किसे थां ना तृप्त कराईआ। मेरा ना कुछ पीण ना कुछ खाण, ना कोई रसना बोले ज़बान ना तेरा भेव सकां जणाईआ। तूं परदा पाया क्यों जहान, भरम भुलेखा वस्सया मात लोकाईआ। पत्थर कदे ना बणया काहन, पत्थर कदे ना बणया भगवान, भगवन तेरा रूप तोहे भाईआ। मैं मूरख मुगध अज्ञाण, मेरा नक्क मूंह हत्थ घड़न तरखान, हत्थ विच्च तिखी तेसी उठाईआ। फिर चुक्क के चार दीवारी अंदर टिकाण, जिथ्थे बहावण ओथे बैठा रहां, उठ उठ दिशा ना किसे जाईआ। ना कोई खावां पीआं पकवान, ना कोई नहावां नहान, जे कोई नुहावे आपणे उप्परों बाहर बाहर धार दिआं वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं पत्थर तुध बिन लथ्था सत्थर, मेरी सेज ना कोई सुहाईआ। (१०-५२३ ५२४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शब्द गोबिन्द किहा मेरे श्री भगवान, भगवन दिआं जणाईआ। उठ वेख लै विच्च जहान, जहालत भरी लोकाईआ। सति रिहा ना विच्च इन्सान, पंज तत्त रिहा कुरलाईआ। तन वजूद होया हराम, हैरत विच्च दुहाईआ। तेरा नज़र ना आवे नाम, काम पड़दा लिआ पाईआ। तेरी बाणी नालों वध्ध शैतान, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। क्यों नहीं हुंदा प्रभू सवाधान, आपणी लै अंगढ़ाईआ। अक्खरां दा रिहा ना कोई ज्ञान, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। साबत दिसे ना कोई ईमान, पैगम्बर मुख छुपाईआ। उठ वेख नौजवान, जोधे आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। (१ कत्तक सै सं ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

क्यों पाल सिँघ ने डाही अग्ग, अगनी अग्ग तपाईआ । एह मर्यादा जग, बिना भगत भगवान दे दूजा यज्ञ कम्म किसे ना आईआ। भावें कोटन कोट साधू लउ सद्द, साधना विच्च ना कोई सफ़ाईआ। जेहड़े आप मंज़ल चढ़ ना सके अद्ध, अगला भेव की खुल्हाईआ। जिन्हां सूर गाँ खाधी वढ्ढ, मच्छिआं मास वटाईआ। उह श्री भगवान तों सदा लई हो गए अड्ड, राए धर्म दए सज़ाईआ। जिस ने धर्म निशाना देणा गड्ड, सतिजुग साची धार प्रगटाईआ। उह सभ तों खेल करे अलग्ग, वक्खरी नीती दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाईआ। (२१ ०२१)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सभ ने बस्त्र पहनणे चिट्टे, चिट्टी धार समाईआ। किसे ने पूजणे नहीं पत्थर वट्टे, इट्टां सीस निवाईआ। किसे चढ़ौणे नहीं टके, भेटा विच्च वडयाईआ। तुहाड्डी आत्मा परमात्मा दे नाते सके, सज्जण इक्को दिता समझाईआ। बाकी चुक्क गए दीन दुनी दे रट्टे, रट्टण इक्को लैणी लगाईआ। माणक हो के रुलणा नहीं विच्च घट्टे, माटी ख़ाक ख़ाक सीस पवाईआ। जन भगतो तुसीं ओस दवारे वसे, जिथ्थे वसे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा चुकावे हक़े, हकीकत दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्को बेपरवाहीआ। (२१ ०२४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन्म जन्म दी मैल सतिगुर सेवा विच्च लथ्थदी, कर्म कर्म दा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तम एह भगती रक्खी हक़ दी, कम्म काज करदिआं पार कराईआ।

(८ विसाख शै सं ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जिन्हां ने धुर नाम सुण के कन्ना, अंदर ना लिआ वसाईआ। उन्हां धर्म राए पीड़ना जिउँ वेलणे विच्च गन्ना, नानक गोबिन्द दोवें देण गवाहीआ। (२२-७५८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत आत्मा कहे जन भगतो कर लउ इक्को प्रण, प्रनाम इक्क जणाईआ । जीवण नालों चंगा समझयो मरन, जिस मरन तों पिच्छों प्रभ दे विच्च समाईआ। साची मंज़ल पौड़ी सिक्खयो चढ़न, आपणा बल वधाईआ। जे कोई मन वासना तुहाड्डे नाल आवे लड़न, उहदे वल ना अक्ख उठाईआ। जे कोई तुहाड्डा धर्म सति आवे हरन, उस दा मुखड़ा

दिउ भवाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को बख्श साची सरन, सिर सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

(५ माघ शै सं १)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सच्चा धन्दा हरि की सेवा, दूजी अवर ना कोई चतुराईआ। अमृत आत्म मिले मेवा, अंमिउँ रस आप चवाईआ। (१३ ४२३)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

आटा गुन्नणा नहीं खुल्ले झाटे, शिव पारबती समझाईआ। एह वस्त लभ्भणी नहीं किसे हाटे, वणजारा वणज ना कोई कराईआ। (२१ ०२४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मदिरा मास मुख लग्गे चाह, हरि संगत विच्च रहण ना पाईआ। हरि संगत धक्का देणा ला, मनमुख कोई दिस ना आईआ। इक्की सिख बणे गवाह, ना सके कोई मिटाईआ।

(८-३३७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

रिद्धि सिद्धि नवें नवें छोटे छोटे चमत्कार, जुगनूंआं वांगू नज़री आईआ। मन मत बुध्धी दा खेल संसार, रुची जगत रचना विच्च लगाईआ। थोड़ी थोड़ी अगनी चंगिआड़ी निकले बाहर, शोहला ऊड के मुड़ भस्म रूप वटाईआ। एह खाण पीण दा अद्धार, पेट दा शिंगार, तत्त सोभा पाईआ। भगत सन्त एस तों वस्सण बाहर, जिथ्थे खेल अपार, इक्को मिले सांझा यार, नूर खुदाई परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेशवर नूरो नूर नूर उजिआर, बिनां सखीआं मंगलाचार, बिनां अक्खीआं होवे दीदार, दरस दरस विच्च मिलाईआ । निक्के निक्के चमत्कार, नहीं एह कूड़ी चमक, चानण सच ना कोई रुशनाईआ। उह धोखा देण वाले अहिमक, आत्म परमात्म जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। सच्चे सन्त उहनां दे नाल कदे नहीं हुंदे सहिमत, जिन्नां साहिब दा दर्शन अंदरे अंदर लैणा पाईआ। श्री भगवान जिन्नां दे उत्ते करदा रैहमत, मेहरवान हो के अक्ख खुल्लाईआ। उहनां दे मन विकार हँकार दी कोई नहीं रहन्दी जहिमत, जगत बिमारी दए गवाईआ। हरिजनो जिन्नां नूं सच इशारे दी वजदी सैनत, समझ विच्चों समझ दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत चमक चांदनी ना कोई रुशनाईआ।

(१८ ५१६)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर हुक्म ते सदा करो यकीन, भुल्ल विच्च भुल्ल कदे ना जाईआ। इस तों वड्डी नहीं कोई होर तालीम, जगत सिक्ख्या कम्म किसे ना आईआ। (२२-६१४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लंगर विच्च लागरी हो के रहे, लंगर मन्दरां नालों चंगा नज़री आईआ। रविदास सुक्का टुकड़ा दे के गिआ कह, सभ नूं सच सुणाईआ। जिस पकवान नूं भगवान बेहा कदे ना कहे, सद अमृत रूप वखाईआ। एथे ओथे इक्को जेहा रहे, हरि संगत लंगर कूकरां शूकरां अग्गे ना कोई सुटाईआ। ओस लंगर विच्च परमात्मा बहे, अग्ग उत्ते सड़ के तवे उत्ते आपणा आप तल के, प्रेम प्रीती विच्च रल के, आपणा रंग वखाईआ।

(२५ माघ २०२० बि)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जो लंगर विच्च होवण सेवादार, सेवा प्रेम नाल कमाईआ। मुखों कुबचन सके ना कोई उच्चार, रसना फिक ना कोई रखवाईआ। (६ अस्सू श स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगतो मथ्थे टेकण नालों लंगर दी सेवा महान, महिंमा अकथ्थ अकथ्थ अकथ्थ ना कोई दृढ़ाईआ। (६ अस्सू श स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

रोटी कहे जिस वेले गुन्नो आटा, पाणी विच्च मिलाईआ। किसे दा खुल्ला ना होवे झाटा, मेंडी सीस सीस गुंदाईआ । किसे दा बस्त्र ना होवे पाटा, कपड़ कूड ना कोई वडयाईआ। नाल इक्क खुल्ले जल दा रक्खणा बाटा, उंगल विच्च ना कोई छुपाईआ। अग्गे आवे ना फेर घाटा, एह बणत देणी बणाईआ । ओस वेले सेवा करे ज़रूर अष्टभुज ज्वाला जिस नूं देवी कैंहदे वाली लाटा, आप आपणा फेरा पाईआ। (१ चेत श स ४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लंगर पकौण तों पहलां पंज वेर जरूर लौणा जैकारा, बिन जैकारिउँ चपाती हत्थ ना कोई सुहाईआ । खतम होण तों बाद फेर एहो हुक्म दुबारा, जै जैकार देणा सुणाईआ।

अज्ज तों एह भुल्लणा नहीं विवहारा, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। उस वेले जरूर हाजर होवे निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। (६ अस्सू श स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

विष्नूं कहे साहिब सतिगुर दा जिथ्थे चलदा होवे लंगर, लांगरी सेवा प्रेम कमाईआ। हिरदे अंदरों गावण चारमंगल, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। कोई गंदी रक्खे ना उंगल, साफ सुथरे सोभा पाईआ। सतिगुर दे लंगर दा कोई मारे कदे ना चुगली चुगल, माड़ा कह ना कोई सुणाईआ। (६ अस्सू श स ५)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

नारद कहे एसे कर के उस चिट्ठीआं दे अधार उत्ते हरि संगत नूं हुक्म दिता लंगर वरताउण तों पहलां ते लंगर वरताउण तों बाद सदा बोलणी सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, जै जै जैकार सुणाईआ। एह लेखा हरि भगत दवार ते भगतां दे गृह गृह, बच्या रहण कोई ना पाईआ। (६ सावण श स ८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मैं सच दस्सां, फरीद कहे, जो हरि का बचन भुल्लया उस नूं करना किसे नहीं मुआफ, अग्गे हो ना कोई छुडाईआ। (१८-३७७)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆